बाइबल की एक कहानी



आशा | उद्देश्य | जीवन

बचाव



जलप्रलय

परमेश्वर की रक्षा, धीरज और एक नई शुरुआत की कहानी।



अब भीतर जाने का समय है

परमेश्वर ने नूह से कहा, 'तू अपने सारे परिवार समेत जहाज़ में जा, क्योंकि मैंने इस पीढ़ी में तुझे धर्मी पाया है।' सात दिन बाद पृथ्वी पर वर्षा आरम्भ होने वाली थी।



पशु पास आए

शुद्ध और अशुद्ध पशुओं के जोड़े, पक्षी और छोटे जीव नूह के पास आए। वे ठीक वैसे ही क्रम से जहाज़ में गए जैसे परमेश्वर ने कहा था।



सब तैयार हो गए

नूह अपनी पत्नी, अपने तीन पुत्रों और उनकी पत्नियों के साथ जहाज़ में गया। सबको बुलाया गया था, पर उनके अलावा कोई और व्यक्ति भीतर नहीं आया।



परमेश्वर ने द्वार बन्द किया

जब सब भीतर पहुँच गए, परमेश्वर ने जहाज़ का द्वार बन्द कर दिया। नूह और उसका परिवार परमेश्वर की रक्षा में था और आने वाली बातों का सामना साथ मिलकर करने के लिए तैयार था।



वर्षा शुरू हुई

नूह छः सौ वर्ष का था जब गहरे सोते फूट पड़े और आकाश के झरोखे खुल गए। चालीस दिन और चालीस रात वर्षा होती रही।



जल ने जहाज़ को उठा लिया

जल लगातार बढ़ता गया और जहाज़ भूमि से ऊपर उठ गया। बड़ी नाव तैरने लगी जबकि पृथ्वी पर वर्षा होती रही।



जहाज़ सुरक्षित तैरता रहा

जल ने सबसे ऊँचे पहाड़ों को भी ढक लिया। जहाज़ के बाहर साँस लेने वाला सब कुछ मर गया। केवल नूह, उसका परिवार और उनके साथ सुरक्षित जीवित प्राणी बचे।



जहाज़ के भीतर बहुत दिन

जल पृथ्वी पर एक सौ पचास दिन तक बना रहा। प्रतीक्षा करते हुए परिवार पशुओं को खिलाता, उनके स्थान साफ करता और हर जीव की देखभाल करता था।



परमेश्वर ने नूह को याद किया

परमेश्वर नूह और पशुओं को नहीं भूला। उसने पृथ्वी पर हवा चलाई। वर्षा रुक गई, गहरे सोते बन्द हो गए और जल धीरे-धीरे घटने लगा।



जहाज़ अरारात पर ठहरा

जहाज़ अरारात के पहाड़ों पर ठहर गया। जल लगातार घटता गया और कुछ महीनों बाद पहाड़ों की चोटियाँ दिखाई देने लगीं।



नूह ने पक्षी भेजे

नूह ने खिड़की खोली। पहले उसने एक कौआ भेजा। फिर यह जानने के लिए एक कबूतर भेजा कि भूमि सूखी है या नहीं, पर बहुत जल होने के कारण कबूतर लौट आया।



जैतून का पत्ता

सात दिन बाद नूह ने फिर कबूतर भेजा। शाम को वह अपनी चोंच में जैतून का एक ताज़ा पत्ता लेकर लौटा। नूह समझ गया कि जल घट रहा है।



सब जहाज़ से बाहर आए

जब भूमि सूख गई, परमेश्वर ने नूह से कहा कि वह अपने परिवार के साथ बाहर आए। सब पशु, पक्षी और छोटे जीव भी बाहर निकले। लम्बी प्रतीक्षा के बाद पृथ्वी पर एक नया जीवन आरम्भ हो रहा था।